(व्यंग्य कविता)
अधिकार

हाँ, संविधान ने दिया उन्हें बराबर अधिकार है,
तभी तो पैतृक संपत्ति में उनका नाम बेकार है।
बिटिया हमारी पढ़ी-लिखी, सर्वगुण संपन्न, घर के कामकाज के लिए तैयार है।
लेकिन इन सब से क्या! दहेज उत्पन्न इनका अधिकार है।

अगर हो वह थोड़ी चंचल तो फिर 'घर वालों ने दिए यह कैसे संस्कार हैं' यह कहने को जन-जन बेकरार है, क्योंकि समाज ने किया कुछ अवधारणा तैयार है;
यह सादगी, कोमलता, भीरुता यही तो उसके व्यवहार है।

हो कभी पुरुषों पर उत्पीड़न और अत्याचार, तब सारे समाज में बन जानी समाचार है, मत जानी हाहाकार है;
क्योंकि अत्याचार और उत्पीड़न समाज द्वारा केवल नारियों के लिए ही बनाए गए अधिकार है।

हो अगर कभी महिला उत्पीड़न की बात तो नील ड्रम का उदाहरण लिए सब तैयार हैं,
बदौलत इसके की दो चार पुरुषों पर भी हुए अत्याचार हैं।
पर उन लाखों महिलाओं का क्या? जिसे हमारा इतिहास शर्मसार है,
समाज का ये कैसा संकीर्ण विचार है, सती, उत्पीड़न, अत्याचार केवल महिलाओं के ही अधिकार हैं।

लेकिन अब चिंता की कोई बात नही अहल-ए-मंसब (उच्च अधिकारी) ने कागजों पर करके,
नारियों की चर्चा दिया बड़ा उपहार है।
नारियों के अधिकारों की चर्चा हो गई कागजों पर, ये तो आलाकमान का पैरोकार है;
इससे बढ़कर भी महिलाओं के लिए कोई अधिकार है!

महिलाओं और पुरुषों को प्राप्त समान अधिकार है।
कदाचित समाज ने ही नारियों का किया व्यर्थ किरदार है,
तभी तो माता-पिता के चिता अग्नि पर केवल पुत्रों का अधिकार है।
आज की नारी सशक्त और समझदार है।
समाज द्वारा रचित पूर्वधारणा की शैय्या पर भीष्म की भांति लेटने को तैयार है;
यही तो उनके अधिकार है।

इस बार तो नही कदाचित अगली बार उनका हो जाना उद्धार है, इस बार तो उत्पीड़न अत्याचार और हिंसा ही उनके अधिकार हैं। आपके क्या विचार हैं आपके नजरिए से तो हम नारी के चाटुकार हैं,
हो ना कोई उनका पक्ष रखने वाला भी क्या वाकई नारियों के ऐसे किरदार हैं?

संदीप नंद
अंग्रेजी विभाग
2023-27
233044